



WWJMRD 2020; 6(9): 11-14
 www.wwjmr.com
 International Journal
 Peer Reviewed Journal
 Refereed Journal
 Indexed Journal
 Impact Factor MJIF: 4.25
 E-ISSN: 2454-6615

जुगनू आरा

अतिथि शिक्षक इतिहास विभाग
 राजेंद्र कालेज, टक्कड़ मोड़ए छपरा,
 बिहार, भारत

इतिहास के संदर्भ में सामाजिक गतिशीलता की प्रकृति

जुगनू आरा

सारांश:

इतिहास के संदर्भ में सामाजिक गतिशीलता का तात्पर्य सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन से संबंधित है। हम वर्तमान में रह करके अतीत का अध्ययन करके ऐसे समाज का निर्माण करके का प्रयास करते हैं जो परिवर्तन के नियम को समाहित किए हुए आगे बढ़ता हो। इतिहासकार की चिंता के घेरे में आने वाले सभी संभावित समाजों का इतिहास होता है जो किसी ऐसे समाज से जुड़े होते हैं जिसका लंबा इतिहास रहा होता है। किसी मानव समुदाय का सदस्य होने का अर्थ होता है अतीत के साथ संबंध बनाते हुए अपने को स्थिर करना। भले यह संबंध उसका इतिहास को नकारने के लिए ही हो। इतिहास की समस्या होती है समाज में अतीत के इस बोध और सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण करना और इस बोध में घटित होने वाले परिवर्तन और बदलाव का विचार करना। इतिहास में हम उन समाजों और समुदाय पर विचार करते हैं जिनके लिए मूलतः वर्तमान की एक प्रकार की आधारसंरचना होता है। यहाँ साफ है कि ऐसे अनेक समाज होते हैं जो अत्यधिक परंपरावादी होते हैं और गतिशीलता को नहीं स्वीकार करते हैं तो वहीं दूसरी तरफ ऐसे भी समाज रहे हैं जिन्होंने नवीनता को स्वीकार किया है।

मुख्य शब्द: इतिहास, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक व्यवस्था.

परिचय

सामाजिक गतिशीलता के दो प्रारूपों की पहचान की गयी है —:

1. सामाजिक गतिशीलता का बंद प्रारूप
2. सामाजिक गतिशीलता का मुक्त प्रारूप

1. सामाजिक गतिशीलता का बंद प्रारूप — जाति व्यवस्था को बंद प्रारूप के रूप में देखा जाता है। जिसमें प्रस्थिति का निर्धारण जन्म के द्वारा होता है।ⁱ जाति एक सामाजिक वर्ग को ही सूचित करती है। ऐसे सामाजिक वर्ग को जिसका निर्माण एवं जन्म या वंशानुक्रम के आधार पर होता है। मनुष्य किसी कुल या परिवार में ही जन्म लेता है उस परिवार की जो भी सामाजिक स्थिति हो जन्म के साथ ही वह स्थिति प्राप्त हो जाती है। इस हमने सामाजिक वर्ग का एक आधार जन्म को माना है।ⁱⁱ आधुनिक भारत के हर एक बड़े इलाके में तकरीबन 2500 से ज्यादा जातियाँ हैं। जाति एक अंतर्विवाही समूह है और व्यक्ति का प्रमुख संदर्भ समूह है। इसकी एक विशेष जीवन पद्धति होती है जिसे रूढ़िगत प्रतिबंधों के जरिये संरक्षित रखा जाता है। पारंपरिक ग्रामीण समाज अर्थतन्त्र में बहुत हद तक जाति व्यवस्था वस्तुओं और सेवाओं की अदला-बदली की मशीनरी उपलब्ध कराती है।ⁱⁱⁱ डे आर्टा नामक विद्वान ने इसके संबंध में लिखा है कि कोई भी अपने पिता का व्यवसाय बदलता नहीं है।^{iv} मोची जाति के सभी लोग मोची होते हैं।^v इससे स्पष्ट है कि सदस्यता जन्मजात होती है उसका एक निश्चित व्यवसाय होता है। इसके संबंध में आंद्रे बेतई ने कहा है कि जाति एक लघु व लोगों नामित समूह है। जिसका आधार अंतर्विवाह ए वंशानुगत सदस्यता और एक जीवन शैली है। कभी-कभी विशेष परंपरागत व्यवसाय एक सोपानीय व्यवस्था में कुछ सीमा तक विशेष सांस्कृतिक प्रस्थिति के संदर्भ में जाति को समझा जाता है।^{vi} उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि जातिय व्यवस्था एक स्थिर समाज को जन्म देती है। चूंकि इसमें प्रस्थिति का निर्माण जन्म के आधार पर होता है परिणामस्वरूप व्यक्ति न तो अपने कार्यों को बदल सकता है और न ही

Correspondence:

जुगनू आरा

अतिथि शिक्षक इतिहास विभाग
 राजेंद्र कालेज, टक्कड़ मोड़ए छपरा,
 बिहार, भारत

उन्नति कर सकता है। जिसके परिणाम यह होता है की सामाजिक पुनर्रमाण में बाधा उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है।

2. सामाजिक गतिशीलता का मुक्त प्रारूप – जन्म के अतिरिक्त किसी भी आधार पर समाज में समूहों का निर्माण वर्ग कहलाता है।ⁱ आर्गबनर के अनुसार एक सामाजिक वर्ग ऐसे व्यक्तियों का योग है जिनकी एक दिए हुए समाज में अनिवार्य रूप से समान सामाजिक स्थिति होती है।^{vi} आदिम समुदायों में कोई भी वर्ग नहीं होता है। मनुष्य प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं को अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए प्रयोग करते थे। जिसके फलस्वरूप प्रकृति द्वारा जीवित रहने के साधनों का वितरण समान होने के कारण वर्ग का जन्म उसी समय नहीं हुआ था। परंतु वितरण भेद आने वाले तथा उसी के साथ समाज वर्गों में विभाजित हो गया। मार्क्स के अनुसार समाज स्वयं अपने अपने को वर्गों में विभाजित कर लेता है यह विभाजन धनी और निर्धन शोषक, शोषित तथा शासक, शासित वर्गों में होता है।^{vii} मैक्स बेबर ने इसी संबंध में कहा है की हम सब समूह को तब वर्ग कह सकते हैं जब उस समूह के लोगों को जीवन के कुछ विशिष्ट अवसर समान रूप से प्राप्त हो। यहाँ तक की यह समूह वस्तुओं पर अधिकार या आमदनी की सुविधाओं से संबंधित आरथी हितों द्वारा पूर्णतया निर्धारित तथा वस्तुओं या श्रमिक बाजारों के अनुरूप हो।^{viii} स्त्रीकरण आयु ए पेशा ए संपत्ति एधर्म राजनीति ए तथा शिक्षा कार्य कुशलता पर आधारित होती हैं। क्योंकि इसके आधार पर व्यक्ति को एक निश्चित प्रस्थिति प्राप्त हो जाती है तथा समान स्थिति वाले व्यक्ति मिलकर के समाज में एक स्तर का निर्माण करते हैं। ये सभी स्तर ऊच.नीच के आधार पर सज जाने के फलस्वरूप सामाजिक गतिशीलता का एक रूप सामने आने लगता है।^{ix} जिसका अभिप्राय यह है की अमीर कल को व्यवसाय में असफल होने के कारण निर्धन भी हो सकता है और निर्धन व्यक्ति अपनी मेहनत के द्वारा अमीर भी बन सकता है। अत वर्गीय स्त्रीकरण के तहत सदस्यों के एक दूसरे के स्तर से दूसरे स्तर में आना जाना संभव है। यह व्यवस्था जातीय और प्रजातीय व्यवस्था में नहीं है। खुली व्यवस्था में गतिशीलता द्वारा अधिक अंतर और विभेदीकरण उभरते हैं तथा दावेदारा इस प्रवृत्ति को सही ठहराते है। इस खुली व्यवस्था में सोपान स्थिर तथा दृढ़ हो सकता है परंतु व्यक्ति सोपान से ऊपर भी उठ सकते है और नीचे भी आ सकते हैं।^x वर्ग की अपनी विशेषताएँ भी होती हैं एक वर्ग में सामान्य जीवन शैली होती है। वर्ग में चेतना पाई जाती है। वर्ग व्यक्तियों की उपलब्धियों पर निर्भर करता है। सामाजिक वर्ग वास्तविक समूह है वे पद नहीं बल्कि उपेक्षा कृत खुले हुये है। सामाजिक वर्ग की संख्या को जब भी निश्चित करने की कोशिश की जाती है तो काफी दिक्कतें खड़ी हो जाती है। फिर भी अधिकांश समाजशास्त्रीय संभवत एक उच्च वर्ग एक मजदूर वर्ग एक मध्यम वर्ग के अलावा कुछ समाजों में चौथा वर्ग किसान की मौजूदगी को भी मान्यता दी जाती है।^{xi} इस तरह गतिशीलता स्त्रीकरण की खुली व्यवस्था का एक मान्य लक्षण है। ऐसी व्यवस्था में प्रायः क्षैतिज गतिशीलता घटित होती है। जिससे व्यवस्था के वैचारिकी संरचनात्मक आधार को कोई चुनौती या खतरा नहीं होता है। इससे व्यवस्था बनी रहती है तथा व्यक्ति क्षैतिज रूप से ऊपर या नीचे होते रहते है।

उद्देश्य

- ✓ इतिहास में सामाजिक गतिशीलता के विभिन्न आयाम का अध्ययन करना।
- ✓ सामाजिक गतिशीलता के समाज के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

- ✓ इतिहास का सामाजिक गतिशीलता का क्या संबंध है।
- ✓ सामाजिक गतिशीलता इतिहास को कैसे प्रभावित करती है।

परिकल्पना

- ✓ समाज में होने वाले परिवर्तन इतिहास और सामाजिक गतिशीलता के आयामों को प्रभावित करते है।

शोध प्रविधि

- ✓ गुणात्मक विधि के साथ साथ विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

स्रोत

- ✓ प्रस्तुत शोध पेपर को पूरा करने के लिए दूतीयक सामग्री का उपयोग किया गया है। जिसमे कितबाए आलेख ए शोध पेपर ए अप्रकाशित शोध प्रबंध और प्रोजेक्ट को शामिल किया गया है।

इतिहास के संदर्भ में सामाजिक गतिशीलता की प्रकृति

सामाजिक गतिशीलता के प्रकार

पिटिरिम सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता को दो भागों में बाटा है^{xii} -

1. क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता
2. उदग्र सामाजिक गतिशीलता

1. क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता – क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता वह जिसमें व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का एक ही स्तर में स्थित एक समूह से दूसरे समूह में स्थानान्तरण होता है। लेकिन उसके सामाजिक स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता है। तो इसे हम क्षैतिज या समतल गतिशीलता कहते है। इस प्रकार के गतिशीलता में व्यक्ति की प्रस्थिति प्रतिष्ठा एवं सम्मान में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है। क्योंकि इसमें व्यक्ति को सामाजिक उन्नति या अवनति का अहसास नहीं होता है। जैसे की कलकत्ता को छोड़ करके कानपुर में बस जाना ए मुख्य न्यायाधीश का तबादला एक राज्य से दूसरे राज्य में हो जाना या दिल्ली में बनी वस्तु का मद्रास में बिकना आदि क्षैतिज गतिशीलता के उदाहरण है। इस प्रकार के सामाजिक गतिशीलता में मुख्य बात यह होती है कि इसमें व्यक्ति या सामाजिक वस्तु की सामाजिक स्थिति में उदग्र दिशा में कोई परिवर्तन हुए ही उस व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का समान स्तर वाले समूह में स्थान में स्थानांतरण होना ही क्षैतिज गतिशीलता है। क्षैतिज गतिशीलता की परिभाषा इस प्रकार है.

फिचर के अनुसार, “क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता का अर्थ एक व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का एक ही स्तर में स्थित एक समूह से दूसरे समूह में स्थानांतरण है।”^{xiii}

गुल्ड एवं काव के अनुसार, “बिना सामाजिक वर्ग के पद में बदलाव किए प्रस्थिति एवं भूमिकाओं के विशेष रूप से व्यवसायिक क्षेत्र में परिवर्तन को क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता कहते हैं।”^{xiv}

पश्चिम के समाजों में क्षैतिज गतिशीलता के उदाहरण में सोरोकिन ने व्यक्तियों के क्षेत्रीय चक्र ए वस्तुओं तथा मूल्यों के चक्र व्यक्तियों का अंत व्यवसायी चक्र ए अंतर परिवार चक्र ए व्यक्तियों में नागरिकता का परिवर्तन ए अंतर धार्मिक अंतर राजनीतिक दल चक्र का उल्लेख किया है। क्षैतिज गतिशीलता का मुख्य बिन्दु यह है की सामाजिक स्त्रीकरण की व्यवस्था इससे प्रभावित नहीं होती है। सामाजिक स्त्रीकरण के वृहद मानवीय साँचे में लोग ऊपर उठ सकते है या नीचे आ सकते है। शिक्षा

व्यवसाय ए प्रवसन तथा नये अवसरों तथा जीवन शैली के बेहतर बनाने की उत्कंठा के द्वारा यह संभव नहीं है।^{xv} जाति व्यवस्था के अतिरिक्त कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें क्षैतिज गतिशीलता देखी जा सकती है। क्षैतिज गतिशीलता के कुछ प्रकार प्रकार हैं।^{xvi}

पेशा संबंधी क्षैतिज गतिशीलता — इस प्रकार की गतिशीलता के अंतर्गत वैसे व्यक्तियों को लिया जाता है जो किसी विशेष कार्य या व्यवसाय को छोड़ करके उसी स्थिति या प्रकृति के दूसरे कार्य या व्यवसाय को अपना लेते हैं क्योंकि इस प्रकार के व्यक्तियों की परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है। उदाहरण दृ एक मजदूर का एक कारखाने को छोड़ करके दूसरे कारखाने में चला जाना।

अंतर.पारिवारिक गतिशीलता — एक विवाहित युगल तलाक होने के बाद पुनः विवाह कर लेने के बाद भी उनकी मूल स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसका कारण यह है कि पुनः विवाह के बाद भी वह किसी के पति या पत्नी रहते हैं।

भूभागीय गतिशीलता — एक स्थान को छोड़ करके दूसरे स्थान में जाने की प्रक्रिया को भूभागीय गतिशीलता कहते हैं। वर्तमान समय में सुविधा या बेहतर अवसर की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान आ जा रहे हैं।

नागरिकता परिवर्तन से होने वाली गतिशीलता — एक राज्य से दूसरे राज्य में जा करके के बस जाना और वहाँ की नागरिकता लेकर निवासी बन जाना एक प्रकार गतिशीलता है।

सामाजिक वस्तुओं तथा मूल्यों में क्षैतिज गतिशीलता दृ किसी भौतिक वस्तु के निर्माण में काम आने वाले औजार खेती के लिए भूमि, समाचार तथा मुद्रा आदि से संबन्धित कुछ नियम और मान्यताएं होती हैं। जो इसी समाज और संस्कृति के द्वारा निर्धारित होती हैं। जिसे हम सामाजिक मूल्य कह सकते हैं। वर्तमान समय में कला और विज्ञान के क्षेत्र में काफी परिवर्तन हुए हैं। परिवर्तनशीलता ही वस्तुतः गतिशीलता को दर्शाती है।

धर्म के संदर्भ में क्षैतिज गतिशीलता — सामान्य शब्दों में कहा जाये तो एक धर्म को छोड़ करके दूसरे धर्म को अपनाना या स्वीकार करना भी क्षैतिज गतिशीलता का उदाहरण है।

राजनीति से संबंधित क्षैतिज गतिशीलता — अनेक राजनीति या कार्यकर्ता भी एक दल को छोड़ करके दूसरे दल में आते और जाते हैं। हालांकि की सदस्यों की राजनीति स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता है। चुनाव के समय दल-बदल की घटना काफी देखने को मिलती है।

2. उदग्र सामाजिक गतिशीलता — उदग्र सामाजिक गतिशीलता का अभीप्राय किसी व्यक्ति या सामाजिक समूह का एक सामाजिक स्तर से दूसरे सामाजिक स्तर में गमन करने से है। सामाजिक गतिशीलता का ऐसा प्रकार जिसमें व्यक्ति अथवा समूह सामाजिक स्तरीकरण व्यवस्था में एक स्तर से दूसरे स्तर स्थानांतरित होता है तो उसे सामाजिक उदग्र गतिशीलता कहते हैं। ऐसी गतिशीलता में सिर्फ व्यक्ति के पद में ही नहीं परिवर्तन आता है बल्कि उसकी कार्यकुशलता और सामाजिक व्यवहार भी प्रभावित होता है। इसके अलावा व्यक्ति की प्रतिष्ठा में भी अंतर आ जाता है। जैसे - किसी व्यक्ति का लाटरी जीत जाने के कारण निम्न स्थिति से उच्च स्थिति में स्थानांतरण को हम उदग्र सामाजिक गतिशीलता कहेंगे। इसी तरह उच्च स्थिति से निम्न स्थिति में

आना और निम्न स्थिति से उच्च स्थिति में आना भी उदग्र सामाजिक गतिशीलता के अंतर्गत आता है। उदग्र गतिशीलता में प्रस्थिति परिवर्तन होता है।

उदग्र गतिशीलता की परिभाषा इस प्रकार है -

फिचर के अनुसार, “उदग्र गतिशीलता को लोगों का एक सामाजिक परिस्थिति से दूसरी एवं सामाजिक वर्ग से दूसरे में गमन ले रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है।”^{xvii}

बट्रेड के अनुसार, “एक सामाजिक स्तर से दूसरे में ऊपर नीचे की ओर गमन को उदग्र सामाजिक गतिशीलता कहते हैं।”^{xviii}

कारे सालासतोगा ने उदग्र गतिशीलता को निम्न आयामों में दर्शित किया है^{xix} -:

अवलोकन की इकाई	गतिशीलता के प्रकार
व्यक्ति	जीवन कार्य निर्माण, अंतरपीढ़ीय गतिशीलता जीवन चक्र के दौरान प्रस्थिति परिवर्तन।
परिवार	अंतरपीढ़ीय गतिशीलता दो या दो से अधिक पीढ़ियों के दौरान एक परिवार का प्रस्थिति परिवर्तन।
समूहिक (स्तरण और व्यवसाय आदि)	सामूहिक गतिशीलता — प्रस्थिति में स्तरण व्यवसायिक लचीलापन।

पिटिरीम सोरोकिन ने उदग्र सामाजिक गतिशीलता के दो रूप बताये हैं^{xx}—:

1. ऊर्ध्वगामी
2. अधोगामी अथवा सामाजिक उत्थान और सामाजिक पतन।

1. ऊर्ध्वगामी — व्यक्ति या समूह का अपने सामाजिक स्तर से ऊंचे सामाजिक स्तर में गमन। उदाहरण — एक लखपति व्यक्ति का सट्टे में हार करके दिवालिया होना या एक गरीब व्यक्ति का सट्टे में जीत करके लखपति बन जाना। सोरोकिन ने यह भी लिखा है की ऊर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता के दो प्रमुख स्वरूप हैं एक तो विद्वमान उच्च स्थिति समूह में निम्न स्थिति समूह के लोगो की घुसपैठ तथा दूसरा ऐसे लोगो द्वारा एक ऐसे समूह का निर्माण करना जो की विधमान स्थिति समूहों से उच्च स्तर का हो।

2. अधोगामी अथवा सामाजिक उत्थान और सामाजिक पतन — वर्तमान प्रस्थिति से निम्न पद की प्रस्थिति। जैसे- किसी की नौकरी छूट जाने के कारण मेहनत मजदूरी करना या किसी का व्यवसाय असफल हो जाने के कारण छोटी सी दुकान चलाना। सोरोकिन के अनुसार अधोगामी सामाजिक गतिशीलता के भी दो रूप हैं।

पहला	दूसरा
समग्र रूप से उच्च स्थिति समूह का नीचे घसीटे बिना एक या कुछ व्यक्तियों का उच्च स्थिति से निम्न स्थिति में गिरना।	एक सामाजिक समूह का समग्र रूप में अधोगमन या अवनति, यह अवनति दूसरे समूहों की तुलना में अपने समूह की स्थिति को गिरा देने में हो सकती है या एक सामाजिक ईकाई के छिन्न-भिन्न हो जाने के रूप में।

क्षैतिज तथा उदग्र सामाजिक गतिशीलता के अलावा व्यक्तिगत गतिशीलता, सामूहिक गतिशीलता, अंतर पीढ़ी गतिशीलता, अंत पीढ़ी गतिशीलता,

वास्तविक गतिशीलता और आभासी गतिशीलता का उल्लेख मिलता है।

जिनका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है –

1.व्यक्तिगत गतिशीलता	2.सामूहिक गतिशीलता	3.वास्तविक गतिशीलता	4.आभासी गतिशीलता	5.अंतरपीढ़ी गतिशीलता ^{xxi}	6.अंतःपीढ़ी गतिशीलता ^{xxii}
अकले व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति में भेद करना अर्थात आय में वृद्धि या पदोन्नति।	किसी समूह या सामाजिक श्रेणी में गतिशीलता अर्थात महाविद्यालय के व्यख्याताओं को यूजीसी का वेतनमान देना।	इसमें व्यक्ति अपने प्रयासों से निम्न स्थिति से उच्च स्थिति को प्राप्त करता है। जैसे – किसी कलर्क का अपने प्रयास से अफसर बन जाना।	व्यक्ति का गतिशीलता की दिशा में प्रयत्नशील होना जैसे - व्याख्याता के द्वारा अपने को प्रोफेसर लिखा जाना।	इस प्रकार की सामाजिक गतिशीलता का अभिप्राय एक या दो पीढ़ी के बीच या एक परिवार तथा एक सामाजिक समूह की पीढ़ियों से है जब प्रस्थितियों में भिन्नता दो पीढ़ियों के मध्य दृष्टिगत होती है। जैसे – परिवार में दादा की स्थिति, उनके पुत्र की स्थिति तथा उनके पोते की स्थिति का अलग-अलग रूप अंतर पीढ़ी गतिशीलता को दर्शाता है।	अंतःपीढ़ी गतिशीलता का अभिप्राय व्यक्ति का स्वयं में विकास या अपने जीवन काल में ही एक प्रस्थिति से दूसरी प्रस्थिति को प्राप्त करना इसमें व्यक्ति का विकास होता है। जैसे – प्राथमिक स्कूल में शिक्षक होते हुए उच्च न्यायालय में न्यायधीश बनना अंत पीढ़ी गतिशीलता को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

- ⁱ पांडे,एस.एस,2009,समाजशास्त्र,भाग-1,पृ.4.26
- ⁱⁱ विद्यालंकार,सत्यकेतु,2015,समाजशास्त्र,पृ.431
- ⁱⁱⁱ बाँटमोर,टी.बी,अनुवादक,गोपाल प्रधान,2004,समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन,पृ.182
- ^{iv} डॉ.सहाय,शिवस्वरूप,2014,प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास,हिंदू सामाजिक संस्थाओं सहित,पृ.60
- ^v शर्मा,के.एल,2011,सामाजिक स्तीकरण,पृ.476
- ^{vi} डॉ.रस्तोगी,अलका,2008,समाजशास्त्र,पृ.227
- ^{vii} मुकजी,रवींद्रनाथ,1961,समाजिक विचारधारा काम्ट से मुकजी तक,पृ.192
- ^{viii} वहीं,पृ.280
- ^{ix} मुकजी,रवींद्रनाथ,डॉ.अग्रवाल,भरत,समाजशास्त्र के तत्व,पृ.199
- ^x शर्मा,के.एल,2011,सामाजिक स्तीकरण,पृ.167
- ^{xi} बाँटमोर,टी.बी,अनुवादक,गोपाल प्रधान,2004,समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन,पृ.186
- ^{xii} Sorokin, Pitirim, Social and Cultural Mobility, New York: The Free Press, 1959.
- ^{xiii} डॉ.रस्तोगी,अलका,2008,समाजशास्त्र,पृ.233
- ^{xiv} वहीं,पृ.233
- ^{xv} शर्मा,के.एल,2011,सामाजिक स्तीकरण,पृ.164
- ^{xvi} पांडे,एस.एस,2009,समाजशास्त्र,भाग-1,पृ.4.27
- ^{xvii} डॉ.रस्तोगी,अलका,2008,समाजशास्त्र,पृ.233
- ^{xviii} वहीं,पृ.233
- ^{xix} शर्मा,के.एल,2011,सामाजिक स्तीकरण,पृ.27
- ^{xx} मुकजी,रवींद्रनाथ,1961,समाजिक विचारधारा काम्ट से मुकजी तक,पृ.330
- ^{xxi} Doda,Zerithun,June,2005,Introduction to Sociology Lecture Notes for Health Science Studies,P.180
- ^{xxii} Ibid.p.181